48

ध्यान लगाए रखना

(15:1-8)

ऑस्ट्रेलिया में जीवन के अपने तनावपूर्ण समय में, नज़र टिका पाना मेरे लिए कठिन था। ध्यान हटाने पर मुझे धुंधला-धुंधला सा दिखाई देता था। मेरे लिए गाड़ी चलाना खतरनाक हो चला था। डॉक्टरों ने मेरे आंख से लेकर ब्रेन ट्यूमर तक के सब टेस्ट कर दिए थे। अन्त में डॉक्टरों ने मेरी समस्या का कारण अधिक काम करना बताया। यह रोग खतरनाक था। ध्यान केन्द्रित न कर पाना भयभीत करने वाला है।[1]

ऑस्ट्रेलिया में रहते समय जो तनाव मुझ पर था, उसे आरम्भिक मसीही लोगों के तनाव से नहीं मिलाया जा सकता। उनके लिए परमेश्वर पर ध्यान लगाए रखना और जो वास्तव में आवश्यक था, उस पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन होगा। प्रकाशितवाक्य लिखने का एक उद्देश्य चाहे वह यूहन्ना के समय के हों या आज के समय के, घबराए हुए मसीहियों को सही दृष्टिकोण रखने में सहायता देना था ।

अध्याय 15 और 16 जो हमें क्रोध के सात कटोरों के बारे में बताते हैं, इस उद्देश्य को पूरा करते हैं। अध्याय 15 जो पुस्तक का सबसे छोटा अध्याय है, कटोरों का परिचय है, जबकि अध्याय 16 उन कटोरों के उण्डेले जाने को दिखाता है। अध्याय 15 का अध्ययन हम इस पाठ में और अध्याय 16 का इससे अगले तीन पाठों में करेंगे।

पौलुस ने यह कह कर कि ''हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं, परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18) हर मसीही को चुनौती दी है। प्रकाशितवाक्य 15 में तीन ''दिखाई न देने वाली बातें'' मिलती हैं, जिन पर मुझे और आपको ध्यान देने की आवश्यकता है।

परमेश्वर की योजनाओं पर नज़र टिकाएं (15:1)

अध्याय का आरम्भ होता है, ''फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिह्न[2] देखा'' (आयत 1क)। पहला ''चिह्न'' जो यूहन्ना ने देखा था, वह सूर्य में लिपटी हुई स्त्री थी (12:1), जबकि दूसरा चिह्न बड़ा लाल अजगर था (12:3)। यह ''एक और चिह्न'' इस पुस्तक का तीसरा और अन्तिम चिह्न था। पहला चिह्न ईश्वरीय उद्देश्य का चिह्न था; दूसरा शैतानी विरोध का और तीसरा अन्ततः विजय का चिह्न था।

यूहन्ना द्वारा देखा गया ''चिह्न'' इस प्रकार था: ''सात स्वर्गदूत जिन के पास सातों

पिछली विपत्तियां थीं,[3] क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है''[4] (आयत 1ख)।[5]

सात न्यायों का यह तीसरा और अन्तिम चक्र है, क्योंकि पहला सात मुहरों का था (अध्याय 4 से 7) और दूसरा सात तुरहियों का (अध्याय 8–11)। 15:1 में तीसरी शृंखला को ''सात विपत्तियां'' कहा गया है।

''विपत्ति'' शब्द से हमें मिस्रियों पर पड़ने वाली दस विपत्तियों का ध्यान आता है जिसमें ''फिरौन को जो वास्तव में शो दिखा रहा था, दिखाने के लिए, परमेश्वर की ओर से दिया गया दस पाठों वाला पत्र व्यवहार कोर्स'' था।[6] प्रकाशितवाक्य 15 और 16 को पूरी तरह समझने के लिए, इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के समय की समीक्षा करनी होगी, क्योंकि इन अध्यायों में ''यूहन्ना की पुस्तक के किसी भाग से भी अधिक निर्गमन के ढंग का अधिक सम्पूर्ण और योजनाबद्ध इस्तेमाल'' मिलता है।[7] ''विपत्ति'' के रूपक का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य में पहले हुआ था (9:20; 11:6), परन्तु ये विपत्तियां सबसे अलग हैं। इन्हें ''अन्तिम'' कहा गया है।[8]

अध्याय में आगे विपत्तियों को ''प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे'' (15:7) कहा गया है। न्याय के तीन दौर किसी न किसी प्रकार एक-दूसरे से मेल खाते हैं, परन्तु हर एक अगले का अगला कदम है, जिसे इस प्रकार दिखाया जा सकता है:

घटनाक्रम 1–मुहरें तोड़ी जाती हैं: प्रकाशितवाक्य।
घटनाक्रम 2–तुरहियां फूंकी जाती हैं: चेतावनी।
घटनाक्रम 3–क्रोध के कटोरे उण्डेले जाते हैं: दण्ड।[9]

तुरहियों और कटोरों में निकट सम्बन्ध मिलता है,[10] एक महत्वपूर्ण अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है: *तुरहियों* को एक तिहाई पृथ्वी को प्रभावित करने की अनुमति थी (8:7–12; 9:15, 18), जबकि *कटोरों* के प्रभाव की कोई सीमा नहीं थी। उन्हें पीछे से पकड़ा नहीं गया था। परमेश्वर का क्रोध पूरी सामर्थ से उण्डेला गया था।

अगले पाठ में हम इस अन्तर के महत्व को समझने का प्रयास करेंगे। अब हम वचन से दो पाठों पर ध्यान देते हैं: (1) परमेश्वर की एक योजना थी; (2) परमेश्वर अपनी योजना पर काम कर रहा है।

ये याद रखने वाली सच्चाइयां हैं: हर समय हमें परमेश्वर के उद्देश्य की समझ आए या नहीं, परन्तु हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की एक योजना है और उसकी योजना पर अमल हो रहा है। ''और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)।

जीवन में सही दृष्टिकोण रखने के लिए, परमेश्वर की योजना पर ध्यान लगाए रखें।

परमेश्वर की सामर्थ पर ध्यान लगाएं (15:2-4)

विपत्तियों वाले स्वर्गदूतों को पहली आयत में दिखाया गया है, जिस कारण हमें तुरन्त उन संकटों को छोड़ देने की उम्मीद हो सकती है। इसके विपरीत पहले हमें आराधना का विषय मिलता है (आयतें 2-4)। (आग मिले कांच के समुद्र पर विजयी पवित्र लोगों का चित्र देखें।) तीनों घटनाक्रमों में आराधना मुख्य भाग रहा है: अध्याय 4 और 5 से हमें सात मुहरों के लिए तैयारी मिली और उन अध्यायों का आवश्यक भाग आराधना के दो दृश्य थे (4:8-11; 5:8-14)। सात तुरहियों वाले भाग में तुरहियों वाले स्वर्गदूतों को (8:2) बजाने की अनुमति दिए जाने से पहले (8:6, 7) पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं ऊपर गई थीं (8:3, 4)। हमें बार-बार आराधना और परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के पूरा होने में सम्बन्ध को याद दिलाया जाता है![11]

कुछ लेखकों का यह मानना है कि अध्याय 15 वाला स्वर्गीय आराधना का दर्शन अध्याय 14 के अन्त में न्याय के दर्शनों का चरम है और इसमें न्याय के दिन के बाद परमेश्वर के सिंहासन के सामने सभी उद्धार पाए हुओं को दिखाया गया है। मेरा मानना है कि यह दर्शन यूहन्ना के समय में मरने वाले विश्वासी मसीहियों को दिखाता हुआ बिल्कुल नया भाग है:

(1) यह दर्शन नये भाग की तैयारी का भाग है: क्रोध के सात कटोरों का उण्डेला जाना।

(2) ''समुद्र'' की रुकावट अभी भी थी (4:6; 15:2); परन्तु जैसा कि हम जानते हैं, समय के अन्त में ''समुद्र भी न'' होगा (21:1)।

(3) परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों और परमेश्वर के सामने जातियों के आने की बात करते हुए गायकों ने भविष्यकाल का इस्तेमाल किया (15:4)।

परन्तु कालक्रम कोई बड़ा मुद्दा नहीं है।[12] महत्व इस बात का है कि ये आयतें *विजय* के दृश्य को दर्शाती हैं।

यूहन्ना ने कहा, ''और मैं ने आग से मिले हुए कांच का सा[13] एक समुद्र देखा'' (आयत 2क)। 4:6 में हमने ''सिंहासन के सामने ... बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र'' देखा था। हमने कहा था कि समुद्र का होना परमेश्वर के स्वभाव की पहुंच से बाहर होने का प्रतीक हो सकता है, विशेषकर जब तक हम देह में हैं।[14] अध्याय 15 में ''आग मिले हुए'' कांच के समुद्र का एक नया विवरण जोड़ा गया है।[15] आग शायद ''दुख रूपी अग्नि'' (1 पतरस 4:12) को कहा गया है, जिसमें से होकर विजयी लोग गए थे या यह परमेश्वर के क्रोध को कहा गया हो सकता है, जो उण्डेला जाने वाला था (देखें प्रकाशितवाक्य 16:8, 9)।[16]

यूहन्ना ने ''कांच के समुद्र के निकट'' खड़े लोगों को देखा था (आयत 2ग)। अनुवादित यूनानी उपसर्ग ''निकट'' का अर्थ आमतौर पर ''पर'' या ''ऊपर'' होता है, परन्तु इसका अनुवाद ''निकट'' हो सकता है जैसा कि हिन्दी में है। यदि इसका अर्थ ''निकट'' लिया जाए तो हमें यहां विजयी इस्राएलियों के लाल समुद्र के पूर्वी किनारे पर

खड़े होने जैसी बात मिलती है। यदि NASB के अनुवाद ''पर'' को लिया जाए तो इस पद का संकेत है कि समुद्र की रुकावट उन्हें बांध नहीं पाई और वे विजयी होकर परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में आ रहे थे।[17]

सबसे महत्वपूर्ण विवरण यह है कि समुद्र पर या उसके निकट *कौन* खड़ा था: ''जो उस पशु, पर और उसकी मूरत पर और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे''[18] (आयत 2ख)। पशु उनके विरुद्ध लड़ा था; उन पर मूर्तिपूजा करने का दबाव डाला गया था; उन पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए थे;[19] परन्तु वे मरने तक विश्वासी रहे थे।[20] इस प्रकार वे विजयी रहे थे! शहादत के एक लेख में हम पढ़ते हैं, ''उनकी विजय का दिन उदय हो गया और वे एम्फिथियेटर की कैद से ऐसे जा रहे थे, जैसे स्वर्ग को जा रहे हों, आनन्दित और शांत।''[21]

विजयी लोग ''परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए'' थे (आयत 2घ)। पुस्तक में वीणाओं का संकेत पहले दो बार आया है (5:8; 14:2); यह तीसरी और अन्तिम बार है। अब तक आप जान चुके हैं कि ये वे वीणाएं नहीं हैं, जो हम देखते हैं।[22] जैसा कि एल्बर्टस पियटर्स ने लिखा है कि अध्याय 15 और 16 में ''मूल अर्थ आशाहीन'' है: ''यह कैसे हो सकता है कि कटोरे में परमेश्वर के क्रोध को लेकर इसे सूरज पर उण्डेल दिया जाए?''[23] जॉर्ज लैड ने ज़ोर दिया है कि वीणाएं ''परमेश्वर की महिमा और आराधना की अभिव्यक्तियां हैं।''[24] ए. प्लम्मर ने उन्हें ''स्वर्गीय सुरों'' के संकेत बताया है।[25]

आयत 3 में विजयी लोगों द्वारा गाए जाने वाले स्वर्गीय संगीत का नाम है: ''और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत,[26] और मेमने का गीत गाते थे'' (आयत 3क)। लैड ने यह अवलोकन दिया है:

> व्याकरण के हिसाब से भाषा में दो गीतों का सुझाव लगता है यानी एक तो मूसा का गीत और दूसरा मेमने का। संदर्भ के हिसाब से विचार यह है कि विजय पाने वाले विजय का गीत गाते हैं, जो पुराने और नये दोनों नियमों के पवित्र लोगों को आता था, क्योंकि दोनों एक ही परमेश्वर के छुटकारों का गीत रहे थे।[27]

मूल ''मूसा का गीत'' इस्राएलियों द्वारा लाल समुद्र के पूर्वी तट पर सुरक्षित पहुंचने के बाद गाया गया था:[28]

> और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाता था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की। तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिए यह गीत गाया। उन्होंने कहा:
>
> मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है;
> घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है।
> यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, ...
> वही मेरा उद्धार भी ठहरा है;
> और मेरा परमेश्वर वही है,

मैं उसी की स्तुति करूंगा (मैं उसके लिए निवास स्थान बनाऊंगा),
मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूंगा। ...
अपनी करुणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की
अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने
पवित्र निवास स्थान को ले चला है
(निर्गमन 14:31-15:13)।

''यह गीत ... आराधनालय की सभाओं में सब्त के दिन शाम को गाया जाता था। इसका रूपक हर श्रद्धालु यहूदी के मन में बसा हुआ था।''[29]

15:3 वाले विजय गीत में मूसा और मेमने का नाम इकट्ठा है, क्योंकि दोनों ने परमेश्वर के लोगों को सुरक्षित जगह पर पहुंचाया। रब्बी लोग मूसा और मसीहा को ''प्रथम छुड़ाने वाला और अन्तिम छुड़ाने वाला'' कहते थे।[30] जिस प्रकार फिरौन से सुरक्षित बचने वालों ने विजय का गीत गाया था, वैसे ही कैसर से बचने वालों ने विजय का गीत गाया: पृथ्वी पर वे परेशानी में थे; परन्तु अब वे शांत थे। पृथ्वी पर वे त्रासदी में थे; परन्तु अब विजयी थे। पृथ्वी पर वे आहें भरते थे; अब वे गीत गाते थे।[31]

विजय के उनके गीत की सबसे महत्वपूर्ण बात यह लगती है कि यह प्रभु के लिए था। उन्होंने उन समस्याओं का गीत नहीं गाया, जो उन्होंने सही थीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ का गीत गाया। जो उन्हें दिखाई गई थी; अपनी प्राप्ति का नहीं, बल्कि जो प्रभु ने प्राप्त किया है, उसका गीत गाया। भजन में उत्तम पुरुष सर्वनाम (''हम,'' ''हमें,'' ''हमारा'') नहीं, बल्कि परमेश्वर की बात करता हुआ केवल अन्य पुरुष सर्वनाम का ही इस्तेमाल मिलता है:

हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,[32]
तेरे कार्य बड़े, और अद्भुत हैं,
हे युग-युग के राजा,[33]
तेरी चाल ठीक और सच्ची है।
हे प्रभु कौन *तुझ से* न डरेगा?
क्योंकि केवल *तू ही* पवित्र है।
और सारी जातियां आकर *तेरे* सामने दण्डवत करेंगी,
क्योंकि *तेरे* न्याय के काम प्रकट हो गए हैं (आयतें 3ख, 4)।[34]

जॉर्ज लैड ने इसे ''बाइबल के पूरे साहित्य में विश्वास की सबसे ज़बर्दस्त अभिव्यक्ति'' कहा है।[35] ''यह गीत पुराने नियम के कई भागों के उद्धरणों का [संग्रह] है,[36] परन्तु यूहन्ना को उन्हें ऐसे मिलाना है, जैसे वे मसीही आशावाद का विजयगान हों।''[37] इस गीत में तीन विश्वास जताए गए हैं। इसमें कालांतर में परमेश्वर द्वारा हमारे लिए जो किया गया है उसके लिए विश्वास दिखाया गया है (आयत 3ख)। इसमें जो कुछ परमेश्वर वर्तमान में हमारे लिए कर रहा है, वह दिखाया गया है (आयत 3ग)। इसमें वह आशा दिखाई गई है कि परमेश्वर भविष्य में हमारे लिए क्या करेगा: ''हे प्रभु कौन तुझ से न डरेगा? ... और सारी

जातियां आकर तेरे सामने दण्डवत करेंगी, ...'' (आयत 4)।

कुछ लोगों ने ''सारी जातियां'' वाक्य का इस्तेमाल हर किसी के उद्धार के प्रमाण के रूप में करने का प्रयास किया है, परन्तु बाइबल स्पष्ट बताती है कि सब का उद्धार नहीं होगा (मत्ती 7:13, 14)। इस शब्दावली का अर्थ इस तथ्य से जुड़ा हो सकता है कि हर जाति *में से* लोग प्रभु की ओर आएंगे (देखें प्रकाशितवाक्य 5:9; 7:9)।[38] दूसरी ओर इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि न्याय के दिन, हर घुटना झुकेगा और ''हर एक जीभ अंगीकार कर लेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है'' (फिलिप्पियों 2:10, 11)। दोनों तरह से शब्दों में यह ज़ोर दिया गया है कि अन्त में लोग मान लेंगे कि केवल परमेश्वर की ही आराधना होनी चाहिए न किसी राजा की, न किसी और व्यक्ति या वस्तु की।

''पवित्र'' शब्द पर ध्यान दें: ''केवल तू ही पवित्र है।'' परमेश्वर की पवित्रता का सम्बन्ध उसके न्याय से बहुत निकट का है:

> ... पवित्रता का परमेश्वर होने के कारण वह पाप को सहन नहीं कर सकता (यशायाह 59:1, 2)। इसलिए पाप को दण्ड देना उसकी आज्ञा के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर की पूर्ण पवित्रता और पाप के स्वभाव के कारण युक्तिसंगत रूप से स्वयं होता है![39]

इस गीत से जो प्रासंगिकता मैं बनाना चाहूंगा, वह यह है कि स्वर्गीय गीत की तरह, हम भी अपना ध्यान अपने बजाय परमेश्वर की ओर लगाएं। यदि हम सतर्क नहीं हैं तो आराधना में दिया जाने वाला हमारा बल अर्थात हमने क्या किया है, हमने क्या नहीं किया, हमें क्या करना चाहिए, हमें क्या नहीं करना चाहिए, हम क्या योजना बनाएं अपने आप के ऊपर होगा । यह सब बुरा नहीं है परन्तु ''प्रेम और भले कामों'' में एक-दूसरे को उकसाना आवश्यक है (इब्रानियों 10:24)। परन्तु ''अपने आप को'' ही खिलाते रहना हमें आत्मिक अकाल पीड़ित और निराश कर सकता है। जो हम *नहीं कर सकते* उस पर जिसे केवल परमेश्वर कर सकता है ध्यान लगाकर हम अच्छा करेंगे!

बहुत पुरानी बात है, यहोशापात राजा ने वही आत्मविश्वास दिखाया था, जिसकी हमें आवश्यकता है: ''हे हमारे पितरों के परमेश्वर! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति-जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता?'' (2 इतिहास 20:6)। परमेश्वर की उपस्थिति में आने पर, हमें उसी की सामर्थ पर ध्यान देना आवश्यक है यानी यह कि उसने क्या किया है, वह क्या कर रहा है और उसने क्या करने की प्रतिज्ञा की है!

परमेश्वर की तैयारी पर ध्यान लगाएं (15:5-8)

आयत 5 में आयत 1 में दिए गए विषय को समेटा गया है। यूहन्ना ने लिखा, ''इसके बाद मैं ने देखा कि स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला गया'' (आयत 5)। निर्गमन

के संकेत से जारी रखते हुए, यूहन्ना ने उस तम्बू का प्रतिरूप देखा, जो सीनै पहाड़ पर बनाया गया था। जंगल वाले तम्बू को ''साक्षी [या गवाही] का तम्बू'' कहा जाता था (निर्गमन 38:21; गिनती 1:50; देखें गिनती 9:15; 17:7; 18:2; प्रेरितों 7:44) क्योंकि इसमें दस आज्ञाओं वाली पट्टियां थीं। ये पट्टियां ''परमेश्वर की अटल मांगों और कठोर न्याय की गवाह'' थीं।[40]

एक ही वाक्यांश में ''तम्बू'' और ''मन्दिर'' शब्दों का होना उलझाने वाला है। आमतौर पर हम मन्दिर और तम्बू को अलग-अलग मानते हैं, तम्बू की जगह सुलैमान के समय में मन्दिर बना दिया गया था। अनुवादित शब्द ''मन्दिर'' का यूनानी शब्द *naos* है, जिसका अर्थ मन्दिर या तम्बू का पवित्र भाग है। इसी लिए NEB में ''साक्षी के स्वर्गीय तम्बू का मन्दिर'' है।[41] संदर्भ में, *naos* का अर्थ तम्बू का परम पवित्र स्थान,[42] अर्थात वह कमरा हो सकता है, जिसमें साक्षी का संदूक था, जिसके अन्दर पत्थर की दो पट्टियां रखी गई थीं। यहूदी काल में परम पवित्र स्थान वह क्षेत्र था, जहां परमेश्वर ने विशेष ढंग से अपने लोगों को मिलने की प्रतिज्ञा की थी।

मन्दिर को खोलने का उद्देश्य स्वर्गीय दूतों को ऊपर आने की अनुमति देना था:[43] ''और वे सातों स्वर्गदूत जिन के पास सातों विपत्तियां थीं, ... मन्दिर [मूल में, पवित्र स्थान] से निकले'' (आयत 6क)। इसलिए यह ज़ोर दिया गया कि वे परमेश्वर का काम करने के लिए उसकी उपस्थिति से आए थे।

स्वर्गदूतों को ''शुद्ध और चमकती हुई मणि पहिने हुए छाती पर सुनहले पटुके बान्धे हुए'' दिखाया गया है (आयत 6ख)। आमतौर पर प्रकाशितवाक्य में स्वर्गदूतों की पोशाक का वर्णन नहीं मिलता। प्रस्तुत विवरण स्पष्टतया यह बल देने के लिए है कि वे *परमेश्वर के* भेजे हुए हैं: परमेश्वर पवित्र और शुद्ध है इसलिए उन्होंने ''शुद्ध और चमकती हुई मणि'' पहनी हुई थी। इससे पहले यीशु को ''छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए'' दिखाया गया था (1:13); ये सातों एक जैसे वस्त्र पहने हुए थे।[44]

''आपातकाल में, जब [अमेरिका का] राष्ट्रपति अपनी कैबिनेट को बुलाता है, ... तो हर कोई उसके कैबिनेट रूम से बाहर निकलने पर उसकी ओर देखता है। वह क्या कहेगा? क्या होने वाला है?''[45] स्वर्गदूतों के उद्देश्य पर चकित होने पर पहले यूहन्ना द्वारा और फिर उसके पाठकों द्वारा ऐसा ही तनाव महसूस किया गया होगा। उन्हें और अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं थी। ''और उन चारों प्राणियों[46] में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर, के जो युगानुयुग जीवता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए''[47] (आयत 7)।

अध्याय 4 वाले सिंहासन के दृश्य से चार जीवित प्राणियों को याद रखें।[48] वे ''सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर'' (4:6) अर्थात सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में रहते हैं। उनके हाथ से कटोरे लेने का अर्थ वही है, जो निजी तौर पर परमेश्वर द्वारा आज्ञा दिए जाने का है।[49]

''कटोरों'' के लिए यूनानी शब्द के अनुवाद प्यालों, मन्दिर के बर्तनों जैसे जिन में से

चीज़ें आसानी से उण्डेली जाती हैं।[50] प्रकाशितवाक्य में सुनहरे कटोरों के बारे में केवल एक और जगह मिलता है, जहां सिंहासन का दृश्य है, जहां चौबीस प्राचीनों के ''हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं'' (5:8)। प्रार्थना और परमेश्वर के उद्देश्यों के पूरा होने के सम्बन्ध को शायद हमें फिर से देखना चाहिए।

तैयारी का दृश्य एक अन्तिम विवरण है, जो अर्थात महत्वपूर्ण है: ''और परमेश्वर की महिमा, और उसकी सामर्थ के कारण मन्दिर [पवित्र स्थान] धुएं, से भर गया और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों विपत्तियां समाप्त न हुईं, तब तक कोई मन्दिर में न जा सका'' (आयत 8)।

प्राचीन तम्बू के पूरा होने के बाद, निर्गमन 40:34, 35 में हम दृश्य के विषय में पढ़ते हैं:

> ... बादल मिलाप वाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवास स्थान में भर गया। और बादल मिलाप वाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज निवास स्थान में भर गया, इस कारण मूसा उसमें प्रवेश न कर सका।[51]

ऐसे ही, इस दर्शन में, परमेश्वर की महिमा से स्वर्गीय तम्बू भर गया और कोई उस में तब तक प्रवेश न कर पाया, जब तक क्रोध के कटोरे खाली न कर दिए गए।

कई बार किसी दुकान पर लिखा हुआ मिलता है, ''मरम्मत के लिए बन्द है।'' हमें मालूम होता है कि वहां जाने की कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है, जब तक मज़दूर अपना काम पूरा नहीं कर लेते। ऐसे ही दर्शन वाले तम्बू में यह चिह्न लगा था: ''न्याय के लिए बन्द है!'' जब तक पश्चात्ताप न करने वालों पर परमेश्वर का न्याय नहीं हो जाता तब तक न तो कोई मनुष्य और न स्वर्गदूत उसकी उपस्थिति में जा सकता था। अनुग्रह का समय बीत चुका था, अवसर निकल चुका था और परमेश्वर के क्रोध को *कोई* रोक नहीं सकता था।

इस पर हम अगले पाठ में और चर्चा करेंगे। अभी के लिए क्रोध के कटोरों को खाली करने की तैयारी में आवश्यक कदमों पर ध्यान दें:

(1) परम पवित्र स्थान खोला गया था।
(2) स्वर्गदूतों को विशेष वस्त्र दिए गए थे।
(3) स्वर्गदूत तम्बू में से बाहर आए थे।
(4) कटोरे तैयार थे।
(5) जीवित प्राणियों ने स्वर्गदूतों को कटोरे पकड़ा दिए।
(6) तम्बू धुएं से भर गया।

मैं एक महत्वपूर्ण नियम को समझाने के लिए तैयारी के इन पगों पर बल देता हूं: कई बार परमेश्वर या तो चीज़ों को सही कर देता है या वह उन्हें सही करने की *तैयारी कर रहा* होता है। कई बार जब लगता है कि परमेश्वर कुछ नहीं कर रहा, तो वह कुछ करने की तैयारी कर रहा होता है। सही समय आने पर वह काम *करेगा* और कोई उसे करने से रोक

नहीं पाएगा।

''... जैसा लिखा है, 'जो बातें आंख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए *तैयार की* हैं''' (1 कुरिन्थियों 2:9)। परमेश्वर की तैयारी पर ध्यान लगाएं। विश्वास में बने रहें।

सारांश

अब तक यह बहुत स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें ईरान, ईराक, आधुनिक इस्राएल या मिस्र, अरब या यूरोपीय साझा बाज़ार या मिडल ईस्ट के बारे में बताने के लिए नहीं लिखी गई थी।[52] बल्कि यह संकट के समय में परमेश्वर के लोगों को उसका सामना और सामर्थ करने के लिए लिखी गई थी। आरम्भिक शताब्दियों के मसीही लोगों को अध्याय 15 की सच्चाइयों की आवश्यकता थी, और आज हमें भी है:

(1) परमेश्वर के पास योजना है।
(2) उसमें उस योजना को पूरा करने की सामर्थ है।
(3) परमेश्वर अपनी योजना पर काम कर रहा है, हमें ऐसा लगे या नहीं।

इन नियमों पर ध्यान लगाए रखें और आप जीवन में आने वाली किसी भी कठिनाई पर विजय पा सकते हैं![53]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का सबसे प्रसिद्ध शीर्षक ''मूसा और मेमने का गीत'' है। इसके जैसे और शीर्षक ''छुटकारे का गीत'' और ''विजय का गीत'' हैं। विलियम हैंड्रिक्सन ने ज़ोर दिया कि इस शीर्षक का स्थान, ''बिल्लौरी समुद्र के निकट'' है। जी. आर. बिसले-मुर्रे ने ''अन्तिम निर्गमन'' शीर्षक का इस्तेमाल करते हुए निर्गमन अध्याय 15 की भाषा पर ज़ोर दिया। राल्फ अर्ल ने इस अध्याय की रूपरेखा दी: (1) प्रतीक्षा करते स्वर्गदूत (आयत 1); (2) विजयी पवित्र लोग (आयतें 2-4); (3) ऊपर आते स्वर्गदूत (आयतें 5-8)।

यदि आप इस शृंखला को छोटा करना चाहें तो अध्याय 15 की चुनिंदा सामग्री का इस्तेमाल परिचय के रूप में करते हुए अध्याय 15 और 16 पर एक पाठ पर प्रचार कर सकते हैं या सिखा सकते हैं।

आप अध्याय (आयतें 2-4) के गीत पर भी उपदेश दे सकते हैं। पुराने नियम के समानान्तर पदों का उल्लेख किया जा सकता है। यह दिखाने के लिए कि किस प्रकार कालांतर में परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाया, और यह दिखाते हुए कि परमेश्वर आज भी अपने लोगों को छुड़ाता है, पुराने और नये नियम में से उदाहरण दिए जा सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]इसकी जगह अपनी आंखें टिका न पाना, अन्धेरे से रोशनी में जाना, सो कर उठने पर, या सिर पर घूंसा पड़ने आदि के अपने अनुभव बता दें। [2]''चिह्न'' शब्द संकेत देता है कि जो सामान्य से हटकर है, अर्थात जो अद्‌भुत है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' के पाठ ''अपने शत्रु को जानें'' में ''चिह्न'' पर नोट्स देखें।) ''बड़ा और अद्‌भुत'' शब्द इसी विचार पर ज़ोर देते हैं। [3]वास्तव में स्वर्गदूतों को आयत 7 से पहले तक ''विपत्तियां'' नहीं दी गई थीं; आयत 1 पूरे अध्याय के कथान का काम करती है। [4]''अन्त'' और ''पूरा हुआ'' शब्दों पर अगले पाठ के आरम्भ में चर्चा की जाएगी। उस चर्चा पर आप पहले से नज़र मार सकते हैं। [5]कटोरों वाले सात स्वर्गदूतों का चित्रण इस पाठ में शामिल किया गया है। पहला कटोरा पहले ही उण्डेला जा चुका है (एक स्वर्गदूत के पास खाली कटोरा है), और दूसरा कटोरा उण्डेला जा रहा है। ऊपर को मुंह किए स्वर्गदूत दो सच्चाइयों का संकेत देते हैं: वे परमेश्वर के निर्देशों के बिना काम नहीं करते, वे परमेश्वर की महिमा इसलिए करते हैं, क्योंकि वह सच्चा और धर्मी है। [6]अबिलेन, टैक्सस के सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में 16 सितंबर 1990 को दिया जॉन रिस्से का संदेश, ''द लास्ट वर्ड ऑन स्क्रिप्चर।'' [7]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 197. [8]प्रकाशितवाक्य 18:4, 8; 21:9; 22:18 में विपत्तियों का उल्लेख फिर से किया जाएगा, परन्तु उन आयतों में अध्याय 16 वाली विपत्तियां हैं। [9]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं'' में तीन चक्रों की तुलना देखें। [10]इस पुस्तक में ''जब परमेश्वर स्मरण करता है'' पाठ देखें।

[11]कइयों का मानना है कि आराधना समय की बर्बादी है, कि ''हमें संसार की समस्याओं का कुछ करने के लिए *काम करना* चाहिए।'' प्रकाशितवाक्य यह सिखाता है कि संसार की समस्याओं की सबसे महत्वपूर्ण बातें जो हम ''कर'' सकते हैं, वह परमेश्वर की आराधना है! [12]याद रखें कि प्रकाशितवाक्य में कालक्रम का अधिक महत्व नहीं है; दर्शन इधर-उधर हो जाते हैं। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए'' में देखें।) [13]समय-समय पर, हमें याद दिलाया जाता है कि जो कुछ यूहन्ना ने देखा था वह *वैसा ही नहीं* था। ऐसा ही एक स्मरण ''का सा'' शब्दों में यहां दिया गया है। [14]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' में 4:6 पर नोट्स देखें। [15]यह उल्लेख करने की बहुत कम आवश्यकता है कि इस दृश्य का अर्थ वही नहीं है, जो दिखाई देता है क्योंकि समुद्र के जल या तो आग को बुझा देंगे या आग समुद्र को सुखा देगी। [16]अध्याय में निर्गमन की पुस्तक की भाषा होने के कारण, कई लोग इसे आत्मिक लाल समुद्र की बात मानते हैं। बेशक यह सम्भव है कि आग का कोई सांकेतिक महत्व नहीं यानी यह दृश्य को बड़ा करने का विवरण मात्र है। कई लोग यहां सूर्यास्त के समय जल की नदी को देखते हैं। ऑस्ट्रलिया के मेरे अनुभव से मुझे ''आग'' से भरा ओपल आता है (पत्थर के बीच में लाल चमकें)। [17]धर्मशास्त्र ''पर'' का समर्थक है; जबकि संदर्भ ''के द्वारा'' के पक्ष में है। दोनों में से कोई भी हो सकता है और कोई भी दूसरे के विपरीत नहीं है। [18]''उसके नाम का अंक'' वह ''चिह्न'' था, जिससे पशु के पीछे चलने वालों को कामकाज करने की अनुमति मिली (13:16, 17)। ''उसके नाम का अंक'' पर टिप्पणियों के लिए इस पुस्तक के पाठ ''जोड़ नहीं बनता!'' में देखें। [19]टिप्पणी 18 देखें। [20]एक बार फिर हम यह ज़ोर देते हैं कि अध्याय 15 वाले स्वर्गीय आराधकों में केवल शहीद ही नहीं है, बल्कि मरने तक विश्वासी रहने वाले *सब* लोग हैं (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

[21]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2 संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 118 में उद्धृत। [22]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''मेमना योग्य है'' में तुरहियों के संकेत पर टिप्पणियां देखें। यहां इस बात को ध्यान में रखें कि उनके *हाथों में* तुरहियां थीं, परन्तु यह उल्लेख नहीं है कि उन्होंने तुरहियां बजाईं। बल्कि यह है कि उन्होंने *गाया*। [23]अल्बर्टस पियटर्स, *स्टडीज़ इन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954), 243. [24]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन टू जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स,

मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 204-5. रेअ समर्स ने कहा कि तुरहियां ''महिमा का संकेत'' है (*वर्थी इज़ द लैंब* [नैशविल्ले ब्रॉडमैन प्रैस, 1951], 184)। [25]ए.प्लम्मर, *पुलपिट कमैंट्री,* अंक 22 *रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1950), 382. [26]मूसा को अक्सर परमेश्वर के सेवक के रूप में बताया जाता था (निर्गमन 14:31; यहोशू 14:7; 1 इतिहास 6:49; दानिय्येल 9:11)। [27]लैड, 205. [28]मूसा ने और गीत भी लिखे जिन्हें प्रकाशितवाक्य 15:3, 4; व्यवस्थाविवरण 32; 33; भजन संहिता 90 के शब्दों में देखा जा सकता है। इनके अलावा (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) यहूदी परम्परा के अनुसार मूसा ने भजन संहिता 91-100 लिखे। [29]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 287. [30]मार्टिन एच. फ्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 105 में उद्धृत।

[31]यह और पिछले दो वाक्य अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर *प्रीचिंग फ्रॉम द रैवेलशन: टाइमली मैसेज फ़ॉर ट्रब्लड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 84 से लिए गए थे। [32]''सर्वशक्तिमान'' होने के गुण परमेश्वर के लिए प्रकाशितवाक्य में नौ बार दिए गए हैं, परन्तु नये नियम में केवल एक और बार दिया गया है (2 कुरिन्थियों 6:18)। रोम की सामर्थ और शक्ति के सामने मसीही लोगों को यह याद दिलाना आवश्यक था कि *सबसे* शक्तिशाली प्रभु ही है। [33]वचन से जुड़ी एक समस्या है। KJV में ''King of saints'' है। NIV में ''King of the ages'' है। इन भिन्नताओं का इतना महत्व नहीं है क्योंकि परमेश्वर *सब* का राजा है। [34]यह गीत भजन संहिता की पुस्तक के गीतों जैसा है। पहली चार पंक्तियों में ''समानार्थक तुलना'' वाला नमूना इस्तेमाल किया गया है। पहली और तीसरी पंक्तियां मुख्यतया समानार्थक हैं और दूसरी और चौथी भी। [35]लैड, 205. [36]पहली और दूसरी पंक्तियों के लिए देखें भजन संहिता 92:5; 98:1; 111:2; 139:14. तीसरी और चौथी पंक्तियों के लिए देखें भजन संहिता 145:17. पांचवीं पक्ति के लिए देखें भजन संहिता 86:9. छठी पंक्ति के लिए देखें 1 शमूएल 2:2; भजन संहिता 99:3; 111:9. सातवीं पंक्ति के लिए देखें भजन संहिता 86:9. अन्तिम पंक्ति के लिए देखें भजन संहिता 98:2. [37]केयर्ड, 198. केयर्ड ने ''संग्रह'' के बजाय ''संकलन'' शब्द का इस्तेमाल किया। ''संकलन कई लेखकों के कामों को मिलाकर किया गया साहित्यिक काम'' को कहते हैं। [38]''सब'' का अर्थ बाइबल में कई बार इसी अर्थ में होता है (देखें मत्ती 3:5)। [39]डेविड रोपर, *जीज़स क्राइस्ट एण्ड हिम क्रूसिफाइड* (अर्वदा, कोलोराडो: क्रिश्चियन कम्युनिकेशंस, 1976), 41. [40]डी. टी. नाइल्स, *एज़ सीइंग द इन विज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ द बुक ऑफ रैवलेशन* (न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1961), 84.

[41]NASB वाली मेरी प्रति में ''temple'' पर एक मार्जिन नोट है, जिसमें ''sanctuary'' है। [42]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं'' में तम्बू का रेखाचित्र देखें। [43]11:19 में मन्दिर वाचा का सन्दूक दिखाने के लिए खोला गया था; इस बार उद्देश्य स्वर्गदूतों को जाने की अनुमति देना था। [44]कइयों का मानना है कि वस्त्र याजकीय पहरावे का संकेत है और यह हो भी सकता है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 98 पर 1:13 पर नोट्स देखें। [45]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 229. [46]चारों प्राणियों में से किसने स्वर्गदूतों को कटोरे दिए? वचन यह नहीं कहता और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पहले चार घुड़सवारों को आगे बुलाने के नाटक में चारों ने ''बोलने में योगदान'' दिया था (6:1, 3, 5, 7)। अब उनमें से एक परमेश्वर की उपस्थिति से क्रोध के कटोरे लाने के बाद ''नहीं बोल रहा।'' [47]इस अध्याय में परमेश्वर और पशु में कई भिन्नताओं का संकेत मिलता है। यह उनमें से एक है: पशु मर जाएगा, परन्तु परमेश्वर ''सर्वदा जीवित रहता है।'' इसलिए भय पशु का नहीं, बल्कि परमेश्वर का होना चाहिए। [48]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' में चार प्राणियों पर नोट्स देखें। [49]कई लोग इस तथ्य में अतिरिक्त महत्व देखते हैं कि कटोरे प्राणियों की ओर से मिले। वे इस तथ्य में सम्बन्ध जोड़ते हैं कि प्राणी सम्पूर्ण *प्रकृति* का संकेत हो सकते हैं और यह बात कि कई कटोरे *प्राकृतिक* विपत्तियां हो सकती हैं। परन्तु सम्भवतया इस बात में कि प्राणियों में से एक परमेश्वर और सात स्वर्गदूतों के बीच मध्यस्थ था, में कोई

''गहरा'' महत्व नहीं है। [50]KJV में ''vials'' है, जिसे आमतौर पर छोटा, तंग मुंह वाला बर्तन माना जाता है।

[51]यही बात तब हुई थी जब मन्दिर पूरा हुआ था (देखें 1 राजा 8:10, 11; 2 इतिहास 5:13, 14)। इससे मिलती-जुलती आयत यशायाह 6:4 है, जहां लोगों ने मन्दिर को परमेश्वर की महिमा से भरा देखा। [52]यह वाक्य माइलो हैडविन, *द ओवरकमर्स: सरमन्स ऑन रैवलेशन* (अर्लिंगटोन, टैक्सस: मिशन प्रिंटिंग, तिथि नहीं), 157 से लिया गया था। [53]यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो अपने सुनने वालों को परमेश्वर के निकट लाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें (याकूब 4:8) ताकि वह उन्हें आशीष दे। जिनका मसीह में बपतिस्मा नहीं हुआ है, उन्हें बपतिस्मा ले लेना चाहिए (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:36-38; गलातियों 3:26, 27)। नीम गरम हो जाने वाले मसीहियों को प्रभु के पास और प्रभु की कलीसिया में वापस आ जाना चाहिए (प्रेरितों 8:22; गलातियों 6:1; याकूब 5:16)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. आयत 7 में ''सात विपत्तियां'' किसे कहा गया है?
2. मिस्र की दस विपत्तियों की समीक्षा करें। उनका उद्देश्य क्या था?
3. प्रकाशितवाक्य में ''न्याय के तीन घटनाक्रम'' क्या हैं? समानान्तर होने के बावजूद ये घटनाक्रम बढ़ते क्रम में हैं। पाठ में उस बढ़ने को कैसे दिखाया गया है?
4. जो कुछ हमने सिंहासन के सामने समुद्र के बारे में पहले कहा था, उस पर विचार करें। यदि 15:2 में ''आग मिले'' समुद्र की बात का कुछ महत्व है तो वह क्या है?
5. प्रकाशितवाक्य में यहां अन्तिम बार वीणाओं का उल्लेख है। क्या ये वीणाएं वैसी ही हैं, जो हम देखते हैं?
6. निर्गमन 15 वाले मूल ''मूसा का गीत'' पर विचार करें। इस्राएलियों का मिस्र की दासता से छूटना पाप से हमारे छुटकारे से कैसे मेल खाता है?
7. जय पाने वालों द्वारा मूसा और मेमने का गीत गाने पर उनके गाने की मुख्य बात क्या थी? क्या वे उन दुखों की बात कर रहे थे, जो उन्होंने सहे थे? क्या वे पूछ रहे थे, ''प्रभु, तू ने हमें कष्ट में क्यों पड़ने दिया?''
8. क्या आप गीत की अलग-अलग पंक्तियों की सच्चाइयों को दिखाते बाइबल के और आधुनिक उदाहरणों पर विचार कर सकते हैं?
9. पाठ में कहा गया है कि ''अपने आप को खिलाना आपको अकाल पीड़ित और निराश कर सकता है।'' आप इससे सहमत हैं या नहीं?
10. सात स्वर्गदूतों की पोशाक और उसके किसी सम्भावित महत्व पर चर्चा करें।
11. यह कहने का क्या अर्थ है कि तम्बू परमेश्वर की महिमा के धुएं से भरा हुआ था?
12. अध्याय 15 में से सबसे महत्वपूर्ण सबक आपको क्या लगते हैं?

आग मिले कांच के समुद्र पर विजयी पवित्र लोगों (15:2)